

गुरु गोबिंद सिंह जी (1666-1708) की सनातन धर्मी विश्व दृष्टि का वीर सावरकर 1883-1966) पर प्रभाव: "हिंदुत्व" एवं "छः स्वर्णिम पृष्ठ" के विशेष संदर्भ में

प्रो. सुधीर कुमार

प्रस्तुत आलेख में गुरु गोबिंद सिंह जी (1666-1708) की सनातन धर्मी विश्व दृष्टि का वीर सावरकर जी (1883-1966) के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर जो गहरा प्रभाव पड़ा उसके अनुशीलन का एक प्रारंभिक प्रयास किया गया है। यहाँ यह रेखांकित करना नहीं भूलना चाहिए कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में सत्ताधारी वर्गों द्वारा लिखवाई तथा विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में सम्मिलित पाठ्य पुस्तकों (विशेषतः मानविकी, इतिहास, समाज-विज्ञान राजनीति शास्त्र, सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन आदि) में जहाँ एक ओर महान सिख गुरुओं और उनकी कालातीत सनातन धर्मी विश्व दृष्टि का और उनके असीम त्याग और बलिदान का कोई विशेष उल्लेख जानबूझकर नहीं किया गया है; वहीं दूसरी ओर राष्ट्र-प्रेम और सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति के प्रखर हस्ताक्षर वीर सावरकर के अविस्मरणीय व्यक्तित्व और कृतित्व को भी लगभग अनुपस्थित रखा गया है। यदि आप भारतीय इतिहास की मानक एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 से 12 तक की पाठ्य पुस्तकों का किंचित भी अध्ययन करें, तो आपको या किसी भी सुधी पाठक को यह आसानी से ज्ञात हो जाएगा कि पाठ्य पुस्तकों में (जो अधिकांशतः मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित लेखकों द्वारा लिखी गई हैं) सभी महान सिख गुरुओं को, उनके जीवन-दर्शन, अद्भुत राष्ट्र-प्रेम, त्याग व सेवा-समर्पण के उद्धरणों, उदाहरणों व महत्त्व को न केवल अनदेखा किया गया है, बल्कि उनके कृतित्व एवं योगदान को 'स्थानीय', 'आंचलिक', 'सामंतवादी', 'अप्रगतिशील', 'राष्ट्रवाद से रहित' जैसे असत्यपरक विशेषणों से व्याख्यायित किया गया है। किम्- बहुना, भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों क्रांतिकारियों तथा राष्ट्रप्रेम के अप्रतिम नायकों, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने जीवन को पूर्णतया समर्पित कर दिया था (जैसे भगत सिंह, चाफेकर बंधु, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, सुभाष बोस, वीर सावरकर, स्वामी श्रद्धानंद आदि) उनके महान योगदान को भी सम्यक प्रकार से पाठ्य पुस्तकों में नहीं रखा गया है-कहीं पर उन्हें 'क्रांतिकारी आतंकवादी', 'अतिवादी', 'कट्टर हिंदूवादी', 'फासिस्ट' जैसे विशेषणों से सजाकर राष्ट्र की युवा पीढ़ी के सामने प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत आलेख में यह देखने का एक विनम्र प्रयास किया गया है कि महान सिख गुरुओं की धर्म-केंद्रित जीवन दृष्टि उनके ज्ञान, कर्म, भक्ति और त्याग परोपकार के समवाय पर आधारित जीवन से जिसे किसी भी कट्टर विचारधारा के भाध्यम से एक विशेष वर्ग या समुदाय की जीवन-दृष्टि के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। किस प्रकार आधुनिक भारत में एक महान कर्मयोगी चिंतक वीर सावरकर ने, प्रेरणा प्राप्त की ताकि भारत की आने वाली युवा पीढ़ी सनातन धर्मी विश्व-दृष्टि से प्रेरणा ले सके, लेता रहे।

सनातन धर्मी सिख विश्व दृष्टि, गुरु गोबिंद सिंह एवं वीर सावरकर

भारत के चारों प्रमुख पंथों-हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख को धर्म-केंद्रित, और इसी महत्तर अर्थ में सनातन धर्मी, विश्व-दृष्टियाँ कहा जा सकता है। चारों जीवन दृष्टियों जोकि अन्यतम रूप से अंतर्संबंधित होकर एक सनातन धर्मी ज्ञान परंपरा या संस्कृति का निर्माण करती हैं, के केंद्र में पुरुषार्थ, धर्म और सत्य जैसे मूल्य-परक तत्व या घटक हैं-चाहे उनकी सामाजिक उपासना पद्धतियों व शब्दावलिओं में भेद हो। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्पष्ट है :

"ब्रह्म महि जनु जन महि पारब्रह्मयु॥

एकहि आपि नहीं कछु भरमु॥"

पुनश्च:

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 287)

"निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक॥

एकहि एक बखाननी नानक एक अनेक ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 5, पृ. 250)

"नानक दूजा अवर ना कोई॥"

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 278) सनातन धर्मी जीवन या विश्व दृष्टि का प्रमुख घटक या तत्व "एकात्मक चराचर सृष्टि-दर्शन है जिसे 'अद्वैत' दर्शन भी कहा जाता है-जिसकी प्राप्ति के लिए सम्यक कर्म, सम्यक ज्ञान, सम्यक भक्ति व धर्म व मोक्ष/मुक्ति हेतु किया जाने वाला पुरुषार्थ परमावश्यक है। तभी तो श्रुति कहती है:

"सर्व खलु इदं ब्रह्म तज्जलानिति शांति उपासीत॥"

"तत्त्वमसि"

"अयं आत्मा ब्रह्म"

"प्रज्ञानं ब्रह्म"

(छांदोग्योपनिषद, 14.1. पृ. 217)2

(वही, पृ. 453)

(माण्डुक्य उपनिषद 1.2 पृ. 10)3

(ऐतरेय उपनिषद 1.3 पृ. 69)4

एकात्मता और अद्वैत का यह समवायित भाव भारत के सनातन धर्मी पंथों (हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध) में प्रमुख रूप से दृष्टव्य है। किंतु यहाँ यह भी नहीं विस्मरण करना चाहिए कि सनातन धर्म-केंद्रित विश्व-दृष्टियों में "एकात्मकता/अद्वैत" का अर्थ मानव के पुरुषार्थ (विशेषतः धर्म व मुक्ति/ मोक्ष) पर आधारित है। सिख गुरुओं ने अर्थ, काम, को धर्म केंद्रित रखते हुए परम सत्य के साक्षात्कार की. परम आनंद की अनुभूति की बात कही है। अतः संसार या संसारिकता या इतिहास से सिख गुरुओं ने पलायन नहीं किया, उनके सत्यों, असत्यों को स्वीकार करते हुए, सत्य और धर्म पर चलने का इन सनातन मूल्यों को आचरण में लाने का मार्ग अपने चरित्र व बाणी द्वारा प्रकाशित किया जैसा कि सनातन धर्म के केंद्र में है:

"सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रनासी"

(श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, श्री दसम ग्रन्थ साहिब, पहली सैंची पृ. 25)

"कहूँ शस्त्र धारी कहूँ विद्यार्थी, कहूँ मारत कहूँ नार के निकेत हो।

....कहूँ धरम धामी कहूँ सरब ठऊर गामी

कहूँ देत कहूँ लेत हो।"

(श्री दसम ग्रन्थ साहिब, पहली सैंची पृ. 29)

"आदि अपार अलेख अनंत अकाल अलख अनसा।

कै सिव शक्ति दए स्तुति चार रचो तम सत तिहु पुर बासा।"

(वही, चंडी चरित्र पृ. 159)

इसी 'चण्डी चरित्र उक्ति बिलास' में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी शक्ति की साधना उपासना करने का आह्वान करते हैं क्योंकि संसार में रहते हुए अधर्म, अन्याय की प्रतीक आसुरी शक्तियों का संहार करना भी मानव का धर्म है:

"तारन लोक उधारण भूमहि दैत संहारण चंद तुही है।"

(वही, पृ. 159)

और तो और जहाँ मानव चेतना में एक और "शक्ति" का

प्रादुर्भाव राक्षसी और धार्मिक अमानवीय शक्तियों के विनाश के लिए हो वही श्री गुरु गोबिंद सिंह जी इसी "शक्ति" का रूपांतरण काव्य प्रतिभा के रूप में भी दर्शाते हैं।

"तामस ता ममता नमता कविता कवि के मन मद्धि गुही है।" (वही, पृ. 159)

कहना न होगा कि गुरु नानक जी से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जो (1666-1708) तक सिख गुरुओं की विश्व-दृष्टि, सत्य और धर्म-इन दो मूल्यों पर, इनको आचरण में लाकर चरितार्थ करने पर और प्रत्येक परिस्थिति में मानव को 'धर्म' की रक्षा करने के लिए हमें प्रेरित करती है। यहाँ यह भी द्रष्टव्य है सनातन धर्मी पंथों/ विश्व दृष्टिओं में धर्म-अंग्रेजी प्रत्यय 'रिलीजन' का पर्याय नहीं है। धर्म से अर्थ है-कर्तव्य, नैतिकता, अध्यात्म, चरित्र, अधिकार, न्याय सार-तत्त्व जिससे धारण किया जाए (आप्टे, पृ. 489-90) इत्यादि। संक्षेप में सभी सिख गुरुओं के जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय परिलक्षित होता है और इस सनातन धर्मी जीवन-दृष्टि की पराकाष्ठा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के चरित्र में दृष्टिगोचर होती है। शस्त्र-शास्त्र समाज संस्कृति-राष्ट्र और चराचर जागतिक चेतना से संपन्न अवतार पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंह जी मानव द्वारा धर्म रक्षार्थ किए गए त्याग, बलिदान व संघर्ष के अप्रतिम उदाहरण हैं।

क्या भारत का इतिहास गुरु तेगबहादुर जी, गुरु अर्जुन देव जी. गुरु गोबिंद सिंह जी के अमर बलिदान की कथाओं को विस्मृत कर सकता है? यक्ष प्रश्न यह है कि अभी तक भारत की एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों से सिख गुरुओं की सनातन धर्मी विश्व दृष्टि व उनके अन्याय, अधर्म के विरोध में किए गए त्याग, बलिदान व संघर्ष की घटनाओं को अलग कर दिया गया है या जानबूझकर सम्मिलित ही नहीं किया गया है ?

इस्लामी कट्टरवादी/ आतंकवादी शक्तियों (मजहबी) द्वारा किए जा रहे बर्बरता पूर्वक अत्याचार अधर्म के विरुद्ध किए गए सिख गुरु के संघर्ष व त्याग से यदि ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले महान वीर सावरकर (1883-1966) जैसे चिंतक-कवि-कर्मयोगी ने, प्रेरणा प्राप्त की इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए !! यहाँ यह स्पष्ट करना समीचीन होगा कि आधुनिक भारत के लगभग सभी महान चिंतकों / स्वतंत्रता सेनानियों ने महान सिख गुरुओं से उनके कृतित्व/चरित्र से किसी ना किसी रूप में प्रेरणा प्राप्त की (श्री अरविंद, स्वामी विवेकानंद, गांधीजी, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, डॉ. अंबेडकर, रविंद्र नाथ टैगोर आदि) किंतु जिस प्रकार की निष्ठा व गहराई से वीर सावरकर जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी व उनकी विश्व दृष्टि का अध्ययन किया। वह उससे तादात्म्य स्थापित किया, जो कि वीर सावरकर के चरित्र व रचनात्मक लेखन में समान रूप से परिलक्षित होता है वैसा किसी भी अन्य आधुनिक भारतीय चिंतक स्वतंत्रता सेनानी के चरित्र लेखन में दृष्टिगत नहीं होता है।

वीर सावरकर एवं महान गुरु गोबिंद सिंह जी: कुछ

महत्त्वपूर्ण बिंदु:

1906 में 'एस एस पर्शिया' नामक जलयान से जब सावरकर जी इंग्लैंड जा रहे थे, तब एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी; 7 जिसका संक्षेप में उल्लेख निम्नवत है: 'वीर सावरकर के एक सहयात्री अमृतसर के निवासी श्री हरनाम सिंह जी थे-जिनकी पगड़ी व वेशभूषा देखकर यूरोपीय गोरे यात्री व उनके बच्चे उनका उपहास उड़ाते थे। यह देखकर एक अभिजात्य, धनी पंजाबी यात्री ने हरनाम सिंह जी को पगड़ी पहनकर जहाज के डेक पर न जाने की सलाह दी। वीर सावरकर जी ने उस तथाकथित 'शिष्टाचारी' धनी पंजाबी से कहा कि

किसी भी सिख के लिए पगड़ी पहनना उसके जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग है-उसे पगड़ी उतारने को कहना हमारा राष्ट्रीय अपमान है. (देखें-सम्पत्, पृ. 92-94); बल्कि हम सभी भारतीय यात्रियों को इस जहाज पर पगड़ी पहननी चाहिए ताकि यूरोपीय यात्री हमारा उपहास करने का साहस ही ना कर पाएँ। विनायक सावरकर जी ने हरनाम सिंह को गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके सुपुत्रों के अमर बलिदान की कथा सुनाई, जिसके कारण हरनाम सिंह जी का आचरण ही परिवर्तित हो गया अब वे आत्मविश्वास व वीरता से युक्त होकर जहाज पर भ्रमण करते थे।'

वीर सावरकर जी ने जीवन दृष्टि व दर्शन के गंभीर अध्ययन के लिए गुरुमुखी लिपि सीखी और सिख पंथ के सभी ज्ञान-ग्रंथों का मूल भाषा में (आदि ग्रंथ, पंथ प्रकाश, सूरज प्रकाश, विचित्र नाटक तथा महान गुरुओं की अन्य रचनाएँ आदि) पढ़ी और उन पर गहन चिंतन किया। कितने भारतीय इतिहासकारों ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि सावरकर जी ने 'खालसा श्रृंखला' प्रारंभ की जिसके अंतर्गत उन्होंने अपने आलेख पत्रों/ निबंधों को प्रकाशित किया और ब्रिटिश साम्राज्यवादी सेना में कार्यरत मिख-सिपाहियों से अनुरोध किया कि वे ब्रिटिश सेना को त्याग कर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होकर भारत माता को स्वतंत्र करवाएँ। उन्होंने अपने इस 'खालसा - श्रृंखला' के आलेखों में सिख गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की 'खालसा' (धर्म-रक्षार्थ व सामाजिक समानता, समरसता हेतु निर्मित सनातन धर्म संगठन जो सिख पंथ का प्रमुख अंग हो गया है) की जीवंत अवधारणा को केंद्र में रखा। ब्रिटिश सत्ता ने परिणाम स्वरूप 'इंडिया पोस्ट एक्ट' के अंतर्गत सावरकर जी कृत 'खालसा श्रृंखला' के पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया।"

अपने महत्वपूर्ण प्रबंध 'हिंदुत्व' (1923) में 'हिंदुत्व' को किसी भी प्रकार के पंथ-या-मत पर आधारित अवधारणा तथा 'हिंदूइज्म' जैसी अतार्किक संज्ञा से पृथक सिद्ध करते हुए वीर सावरकर जी ने हिंदुत्व को एक सांस्कृतिक भौगोलिक जीवन पद्धति बताया जिसके केंद्र में धर्मतत्व है और उसके उदात्त उदाहरण के लिए श्री गुरु तेगबहादुर जी और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को उद्धृत किया-'जब औरंगजेब ने कश्मीरी ब्राह्मणों ने कहा गया कि या तो मुसलमान बनो या मरने के लिए तैयार हो जाओ तब उन्होंने गुरु तेगबहादुर जी से संपर्क किया, तेगबहादुर जी ने निडरता पूर्वक कहा :

तिन ते सुन श्री गुरु तेगबहादुर। धर्म निवारण विषे बहादुर।

उत्तर भन्यो कर्म हम हिन्दू। अति प्रिय किम करे निकंदु।

(सूरज प्रकाश ग्रन्थ)

अर्थात् यह शब्द सुनकर गुरु तेगबहादुर जी ने उत्तर दिया-प्राण से भी प्रिय हिंदू धर्म की अप्रतिष्ठा में नहीं कर सकता।

उन्हीं के यशस्वी पुत्र गुरु गोबिंद सिंह कवि, दृष्टा तथा हम हिंदुओं के लिए युद्ध करने का प्रण करने वाला योद्धा अपनी कविता में कहता है:

"सकल जगत में खालसा पंथ गाजे,

जगे हिंदू धर्म सकल भंड भाजे।" (विचित्र नाटक)

खालसा पंथ का सर्वत्र प्रसार हो। हिंदू धर्म चिरंजीवी चिरंजीत

हो तथा सभी आडम्बरों का नाश हो।

(सावरकर समग्र भाग 9. पृ. 70-71) अपने इसी महत्त्वपूर्ण प्रबंध "हिंदुत्व" में चार शीर्षकों के अंतर्गत "हमारे सिख बंधुओं का उदाहरण", "सिख वास्तविक रूप में हिंदू ही हैं", "स्वतंत्र प्रतिनिधित्व और सिख समाज" हिंदुओं से अलग समझना सिखों के लिए भयंकर हानिकारक होगा" (कृपया देखें सावरकर समग्र भाग 9 पृ. 119-125) सावरकर जी ने सनातन धर्मों विश्व दृष्टियों के एकत्व (उदाहरणार्थ हिंदू और सिख) को प्रमाणित करते हुए कहा "आज का सिख कल का हिंदू है। कदाचित हिंदू भविष्य में सिख बन सकता है। रोज के व्यवहार रीति रिवाज तथा पहनावे में फर्क हो सकता है. परंतु इस कारण रक्त अथवा बीज में कोई फर्क नहीं आता है अथवा इतिहास को संपूर्णतः मिटा कर नष्ट नहीं किया जा सकता। हमारे सिख बंधुओं का हिंदुत्व स्वयंसिद्ध है... गुरु ग्रंथ को पवित्र मानकर उनका पठन सिखों के समान सनातनी भी करते हैं। सिख और सनातनियों में परस्पर अंतरजातीय विवाह रू हो चुके हैं। वैष्णव जिस प्रकार वैष्णव बने हुए हैं. इसी प्रकार सिख भी सिख बने रहने चाहिए जैन, वैष्णव या लिंगायत भी अपने को उसी प्रकार अलग समझते हैं, किंतु सांस्कृतिक जातीय अथवा राष्ट्रीय अर्थ में हम सभी लोग एक हैं और अभिन्न हैं..।। हम लोग सिख हैं हिंदू हैं तथा भारतीय भी हैं. इन दोनों का समन्वय हम दोनों में विद्यमान है तथापि हम लोगों को स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त नहीं है। (सावरकर समग्र, भाग 9. पृ. 120-121)

ध्यान रहे वीर सावरकर जी महान गुरुओं के दर्शन तथा वैदिक दर्शन से प्रेरणा लेकर ही अपनी अद्वितीय विश्व दृष्टि से हिंदू सिख समुदाय की राष्ट्रीय सन्दर्भों में एकता के सूत्रों को समझने की बात कर रहे थे. जिस दृष्टि की आज के अलगाववादी विमर्श को प्रायोजित करने वाली बाह्य शक्तियों के बढ़ते प्रभाव के सन्दर्भों में महती आवश्यकता है। अपने महत्त्वपूर्ण प्रबंध 'हिंदुत्व' के अंत में वीर सावरकर महान गुरुओं के सार्वकालिक, सार्वभौमिक दर्शन व सनातनी दर्शन से प्रेरणा लेकर 'हिंदू कौन है' का उत्तर देते हैं, जिसकी ओर ध्यान, वैचारिक अतिरेकों के इस युग में, शायद ही किसी ने दिया हो:

"हिन्दू जबतक एक हिंदू ही नहीं बना रहता, तब वास्तविक अर्थ में उच्च अवस्था को प्राप्त हिंदू ही होता है।" (यही.पृ. 134) इसी प्रकार सावरकर जी अपने प्रबंध "छः स्वर्णिम पृष्ठ (पृ 394-407) में बहुत प्रमुखता, प्रखरता के साथ गुरु गोबिंद सिंह जी की वैश्विक दृष्टि व सिख गुरुओं का भारत की राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने हेतु किए गए त्याग और बलिदान के प्रयासों को रेखांकित किया है। महान सिख गुरु नानक देव जी द्वारा सिख धर्म की स्थापना को पंद्रहवीं शताब्दी के भारतीय समाज वह इतिहास की पृष्ठभूमि के साथ विश्लेषण करते हुए सावरकर जी स्मरण करना नहीं भूलते कि "उस समय पंजाब में ऐसा कोई हिंदू नहीं था. जो वहाँ मुस्लिम राज्यसत्ता को कड़ी चुनौती देता। यद्यपि गुरु नानक देव जी संपूर्ण हृदय से यह उपदेश देते थे कि मैं हिंदू मुसलमान का भेद नहीं मानता; तथापि उनके शिष्य वर्ग में

क्वचित् हजारों में एक मुसलमान कहीं दृष्टिगत होता था। शेष सभी हिंदू उनके पक्ष में थे श्री गुरु नानक स्वयं वैश्य (बनिया) जाति के थे।" (सावरकर समग्र, भाग 6. पृ. 395)

की पांडुलिपि संभवतः अंग्रेजों के हाथ पड़ी और नष्ट हो गई। वह दुःख हमें आज भी व्यथित करता है। यह भी संभव है कि जिसके साथ हमने यह पांडुलिपि प्रकाशनार्थ गुप्त रूप से भारत भेजी थी, उसने ही अंग्रेजी पुलिस के भय से उस पांडुलिपि को समुद्र को अर्पित कर दिया होगा। अर्थात् हमारा वह मराठी ग्रंथ प्रकाशित होने से पूर्व ही नष्ट हो गया।" (सावरकर समग्र: भाग 6. पृ. 475-476)

यहाँ इसे भी स्मरण करना व कराना चाहिए कि लंदन में 22 जनवरी, 1909 को श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश उत्सव को राष्ट्रीय उत्सव के आयोजन में वीर सावरकर जी की प्रमुख भूमिका रही थी। सावरकर जी कहते हैं कि "मनुष्य की दैवीय शक्ति का विकास करने के लिए जो प्रयास श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने किए हैं वे सदैव स्मरण किए जाएंगे। अपने व्याख्यान में वीर सावरकर जी ने निशान साहिब के ऊपर लिखे तीन मूल शब्दों "देग तेग फतेह" के सनातन धर्मी अर्थों को उद्घाटित किया। वे कहते हैं-"सिख धर्म एवं श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के चरित्र का यह तीन पंखुड़ियों वाला फूल है और इसका उच्चारण भी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने ही किया था। देग माने तत्व, तेग माने तलवार और फतेह माने विजय होता है। तलवार के बिना तत्व भी लंगड़ा पड़ता है ऐसा देखकर गुरु गोबिंद सिंह ने तलवार उठाई और हिंदू पक्ष अंततः विजयी हुआ।" (सावरकर समग्र, भाग 6. पृ. 581-582) यहाँ यह भी स्मरण योग्य है कि वीर सावरकर ने पहली बार अंडमान निकोबार की सेल्यूलर जेल में अपना जीवन कार्य कारावास की भयंकर यात्रा को कहते हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा की जा रही संकर पीड़ा व अपमान से विचलित न होने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाश पर्व आयोजित किया, जिसमें सभी भारतीय कैदियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाशोत्सव प्रतिवर्ष यहाँ आयोजित होने लगा।

जैसा कि उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सिख गुरुओं के सनातन धर्मी जीवन दृष्टि के उन्मेष की, उनकी पुनर्व्याख्या की, उसके प्रचार-प्रसार की आज के आतंकवाद, अलगाववाद तथा वैचारिक अतिवाद के संदर्भ में महती आवश्यकता है। प्रस्तुत आलेख में वीर सावरकर जैसे प्रखर स्वतंत्रता सेनानी तथा महान चिंतक ने किस प्रकार महान सिख गुरुओं की दृष्टि व दर्शन तथा सनातन धर्म के मूल तत्वों में समवाय स्थापित करते हुए राष्ट्रीय चेतना तथा स्व-धर्म व राष्ट्र धर्म का विश्लेषण किया-उसका एक प्रारंभिक, अपूर्ण, अनुशीलन किया गया है। इत्यलम्

संदर्भ

1. श्री गुरु ग्रंथ साहिब (हिंदी शब्दार्थ) प्रथम भाग, पटियाला पंजाबी यूनिवर्सिटी, प्रकाशन विभाग 1989, प्रस्तुत आलेख में श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पृ. संख्या सहित) के इसी संस्करण से गुरबानी उद्धृत की गई है।
2. छान्दोग्योपनिषद् (स्वामी सर्वानन्द), मद्रास, श्री रामकृष्ण मठ, 19561 प्रस्तुत आलेख में छान्दोग्योपनिषद् से उद्धरण इसी संस्करण से लिए गए हैं। पृ. सहित लेख में उद्धृत।

3. माण्डुक्योपनिषद (अनु। स्वामी सर्वानन्द), मद्रास, श्री रामकृष्ण मठ तिथि नहीं
4. ऐतरेय उपनिषद, मद्रास, श्री रामकृष्ण मठ तिथि नहीं
5. श्री दसम ग्रन्थ साहिब (पहली सैंची) अनु। जोधसिंह, लखनऊ, भुवन बाणी ट्रस्ट 2010 (आलेख में श्री दसम ग्रन्थ की वाणी को 1997
6. इसी संस्करण से उद्धृत किया गया है) वामन शिवराम आप्टे संस्कृत हिंदी कोश, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास,
7. देखें विक्रम संपत, सावरकर इकोज प्रॉम अ फोगीटन पास्ट :1883-1924, गुरुग्राम, पेंग्विन वाइकिंग, 2019 (आलेख में सम्पत के नाम से पू सहित उद्धृत)
8. वी.डी. सावरकर: "इनसाइड दि इनिमी कैप एच टी टी वी सावरकर। आर्ग/एन/एनसिक/2021/6/24 डाउनलोड सेक्शन्स एच टी एम एल
9. सावरकर समग्र स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर भाग
9. दिल्ली प्रभांत प्रकाशन 2014 आलेख में सावरकर समग्र (भाग व पू. संख्या सहित उद्धृत)
10. सावरकर समग्र: भाग छ: (पू. 394-407)
11. "छ: स्वर्णिम पृष्ठ" (13-478)